# खादी की विशिष्टता

- खादी हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रपिता की गौरवशाली विरासत है। खादी एवं ग्रामोद्योग भारत की दो राष्ट्रीय धरोहर हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में खादी और ग्रामोद्योग (केवीआई) का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ये बहुत कम प्रति व्यक्ति निवेश से रोजगार पैदा करते हैं।
- खादी को 'भारत में सूती, ऊनी या रेशम के धागों से हथकरघे पर बुने गये और हाथ से काते गये किसी भी कपड़े, या दो या सभी धागों के संयोजन' के रूप में परिभाषित किया गया है।
- खादी क्षेत्र, मीट्रिक गिनती प्रणाली (एस ट्विस्ट यार्न) का पालन करके कताई और बुनाई (हाथ से काता या हाथ से बुना गया) में पारंपरिक तकनीक का उपयोग कर रहा है, जो मिलों/हथकरघा क्षेत्र से पूरी तरह से अलग है (क्योंकि वे अंग्रेजी गणना प्रणाली के साथ जेड ट्विस्ट यार्न का उपयोग कर रहे हैं।) इसके अलावा, खादी क्षेत्र के कताई और बुनाई दोनों के लिए अपने स्वयं के तकनीकी/गुणवत्ता मानदंड हैं, जो मिल/हथकरघा. क्षेत्र से बिल्कुल अलग हैं।
- हाथ से काती गई या हाथ से बुनी गई प्रक्रिया से कपास, रेशम और ऊन जैसे प्राकृतिक रेशों से बनी खादी में अधिक कोमलता होती है, जो इसे गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म बनाती है।
- इसके अलावा, खादी को ज्यादातर प्राकृतिक रंगों जैसे इंडिगो, एलिजारिन, लाल रंग के जंग लोहा के साथ गुड़ के किण्वित पानी के साथ रंगा जाता है और अनार तथा हरड़ का उपयोग करके इसे पीला रंग दिया जाता है, जिससे यह त्वचा तथा पर्यावरण के अनुकूल, आरामदायक, सांस लेने योग्य और शून्य कार्बन उत्पाद बन जाता है। इसके अलावा खादी की एक निश्चित मात्रा जैविक कपास से भी बनती है। इन अद्वितीय विशेषताओं के साथ, खादी कपड़ा टिकाऊ है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर खादी का उत्पादन होता है, जो सबसे अमीर लोगों तक पहुंचता है।
- खादी ग्रामोद्योग आयोग - केवीआईसी, आंध्र पांड्योर फाइन खादी (100 प्रतिशत जैविक कपास के उपयोग और पुरानी पारंपरिक प्रक्रिया के उपयोग के साथ), 300 से 500 मलमल खादी, टस्सर सिल्क खादी, रेशम के कचरे आदि से बना स्पन सिल्क कपड़ा जैसी विरासत खादी किस्मों का उत्पादन करके बुनाई क्षेत्र में राष्ट्रीय पारंपरिक विरासत शिल्प को बरकरार रख रहा है। 300 से अधिक धागों से निर्मित मलमल खादी कपड़ा किसी भी उपकरण/मशीन का उपयोग कर उत्पादित नहीं किया जा सकता है। यह एक ऐसी विरासत प्रक्रिया है जो अब भी खादी ग्रामोद्योग आयोग के पास है। ❑

– **विनित कुमार**, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (केवीआईसी)